(पृष्ठ १९ का शेष...)

यहाँ तो यह बात की है कि पहले ऐसी कल्पना होती है; परन्तु फिर स्वरूप में स्थिर होने पर समकिती और मुनि को - सबको वह कल्पना नहीं होती - इतनी बात यहाँ सिद्ध करना है।

कलश - 45

अचेतने पुद्गलकायकेऽस्मिन्
सचेतने वा परमात्मतत्त्वे।
न रोषभावो न च रागभावो
भवेदियं शुद्धदशा यतीनाम्।।

इस अचेतन पुद्गलकाय में द्वेषभाव नहीं होता और सचेतन परमात्मतत्त्व में रागभाव नहीं होता - ऐसी शुद्धदशा यतियों की होती है।

अहा! शुद्धदशावाले यतियों को अर्थात् संत मुनिवर को इस अचेतन पुद्गल काय में द्वेषभाव नहीं होता या सचेतन परमात्मतत्त्व में रागभाव नहीं होता। अचेतन के प्रति यह मैं नहीं हूँ, यह मैं नहीं हूँ - ऐसा भाव अर्थात् द्वेषभाव नहीं होता, अपितु वो तो ज्ञाता-दृष्टा ही रहते हैं और त्रिलोकीनाथ तीर्थंकर परमेश्वर सचेतन हैं तो उनके प्रति भी उनको रागभाव नहीं होता।

तात्पर्य यह है कि वे मुनिराज तो वीतरागभाव में जम रहे हैं। इसका नाम यति है। अहा! जिसे आनन्दस्वरूप ज्ञानभाव अनुभव में आया हो और उसकी साधना में ही जो वर्तते हों, उनको यति कहा जाता है। अत: जिनको मात्र आत्मस्वभाव-समभाव प्रगट हुआ है - ऐसे यतियों को परमात्मा के प्रति भी राग नहीं होता और पुद्गल के प्रति द्वेष नहीं होता अर्थात् उनको तीनलोक के नाथ तीर्थंकर के प्रति राग और शरीरादि के प्रति द्वेष नहीं वर्तता। **(क्रमश:)**

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान देखिये जी-जागरण पर प्रतिदिन प्रात: 6.40 से 7.00 बजे तक

वीतराग-विज्ञान

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का , घर-घर होय प्रसार।।

वर्ष : 27 306 अंक : 6

चेतन अपनो रूप निहारो

नहिं गोरो नहिं कारो चेतन अपनो रूप निहारो।
दर्शन-ज्ञानमई चिन्मूरत सकल करमतैं न्यारो।।टेक।।

जाके बिन पहचान जगत में सह्यो महा दुख भारो।
जाके लखे उदय हो तत्क्षण केवलज्ञान उजारो।।
चेतन अपनो रूप निहारो।।१।।

कर्मजनित पर्याय पाय के कीनो तहाँ पसारो।
आपा पर को रूप न जान्यो तातैं भव उरझारो।।
चेतन अपनो रूप निहारो।।२।।

अब निज में निज कूं अवलोकूं जो हो भव सुलझारो।
जगतराम सब विधि सुखसागर पद पाऊँ अविकारो।।
चेतन अपनो रूप निहारो।।३।।

* * *

नियमसार प्रवचन

योगी निर्विकल्प होते हैं

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार की 29 वीं गाथा की टीका में समागत 44वें कलश पर हुये आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है। कलश मूलत: इसप्रकार है –

पुद्गलोऽचेतनो जीवश्चेतनश्चेति कल्पना।
साऽपि प्राथमिकानां स्यान्न स्यान्निष्पन्नयोगिनाम् ।।44 ।।

पुद्गल अचेतन है और जीव चेतन है – ऐसी कल्पना भी प्राथमिकों (प्रथम भूमिकावालों) को ही होती है, निष्पन्न योगियों को नहीं होती अर्थात् जिनका योग परिपक्व हुआ है, उनको नहीं होती।

पूर्व में पुद्गल की व्याख्या करते हुये छह प्रकार के स्कन्ध का और परमाणु की स्वभावपर्याय का बहुत कथन किया गया था। अब कहते हैं कि पुद्गल और रागादि अचेतन हैं और जीव जानने-देखनेवाला भगवान आत्मा (चेतन) है।

अहा ! रागादि से पुद्गल परमाणु पर्यंत सभी अचेतन और जीव चेतन **– ऐसी कल्पना भी प्रथम भूमिकावालों को होती है।**

अहा ! कहते हैं कि शुरुआत में अभी जिसको भेद करके ध्यान करना है, उसको ऐसा विकल्प होता है कि यह रागादिक पर अचेतन हैं और आत्मा (स्वयं) चेतन है। मुमुक्षुजीव को यह विचार प्रारंभिक भूमिका में ही होता है; परन्तु निष्पन्न योगियों को अर्थात् जिनका योग परिपक्व हुआ है, उनको नहीं होता।

जहाँ अन्दर में स्वभावसन्मुखता की रमणता उग्ररूप से प्रगट हुई है, उस योगी को ऐसी कल्पना नहीं होती कि यह राग अचेतन है और मैं चेतन हूँ; अपितु वह तो ज्ञाता-दृष्टारूप परिणमता है। अहा ! जिसप्रकार सिद्धभगवान जानते-देखते हैं, उसीप्रकार यह जीव भी जानने-देखने के स्वभावरूप रहता है।

जिन्हें स्वरूप में स्थिरतारूप ध्यान नहीं है, उनको यह अचेतन है और यह

चेतन - इसप्रकार दो विभागरूप विकल्प होते हैं; परन्तु जो ज्ञान और आनन्दस्वभाव में लीन होते हैं, जमते हैं, उन्हें विकल्प नहीं होते।

अहा ! निष्पन्न योगी को अर्थात् जिसको अन्तर एकाग्रता की प्राप्ति हुई है - ऐसे संतों/योगियों को यह कल्पना नहीं होती।

जगत में पुद्गल है, स्कन्ध है, स्कन्ध छहप्रकार के हैं, स्वाभाविक कारणपरमाणु है, कार्यपरमाणु है, उत्कृष्ट और जघन्य परमाणु है - ऐसा कहकर उसमें से सार यह निकाला कि वे सब भले ही हों; परन्तु मेरा उनके साथ कोई संबंध नहीं है। पहले विचार में यह बात जरूर आती है कि पुद्गल तथा जो रागादि कल्पना है, वह अचेतन है और मैं उनको जाननेवाला एक चेतन हूँ, इसलिये मुझे निजचेतन में स्थिर होना चाहिये। जहाँ प्रारंभ में यह विचार होता है, वहाँ स्थिरता नहीं होती; परन्तु निष्पन्न योगियों को उग्रपने आत्मा और राग की भिन्नता होकर, योग परिपक्वता अर्थात् स्थिरता हुई है। उसको स्वभाव में जिसकी एकाग्रता हुई है; उसकी कल्पना नहीं होती। इसी का नाम स्वभावसन्मुख की एकाग्रता है और यही मोक्ष का मार्ग है।

प्रश्न - प्राथमिक भूमिका में अर्थात् मिथ्यादृष्टि ही न...?

उत्तर - नहीं, सम्यग्दृष्टि भी; क्योंकि सम्यग्दृष्टि होने पर भी अभी जहाँ तक यह चेतन है और अचेतन है - ऐसी विचारधारा चलती है, वहाँ तक उसको निष्पन्न स्थिरता नहीं हुई है - ऐसा कहते हैं, तथापि वह है समकिती.....।

प्रश्न - समकिती को चेतन तो प्राप्त हुआ है न ?

उत्तर - हाँ, तो भी विकल्प है न ! उसको चेतन तो प्राप्त ही है; तथापि अभी विकल्प है। इसकारण उसे यह चेतन है और अचेतन है - ऐसा भाव आता है।

प्रश्न - क्या शास्त्र लिखनेवाले प्राथमिक भूमिका में हैं ?

उत्तर - नहीं, वे प्राथमिक भूमिका में नहीं हैं। वे तो अपने में जम रहे हैं और विकल्प-विकल्प के स्थान पर है। **(शेष पृष्ठ 4 पर ...)**

छहढाला प्रवचन

जीव अजीव के बारे में विशेष भूल

मैं सुखी–दुःखी मैं रंक–राव, मेरे धन–गृह गोधन प्रभाव।
मेरे सुत तिय मैं सबल दीन, बेरूप–सुभग मूरख–प्रवीन।।४।।

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान दौलतरामजीकृत छहढाला पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

अज्ञानी जीव उपयोगस्वरूप को नहीं पहिचानता, जीव और देह की चाल भिन्न-भिन्न है – ऐसा न जानकर उनको एकमेक मानता है और अपने को देहरूप ही समझकर उसमें निजपिछान करता है – ऐसी भूल का कथन छन्द २ व ३ में किया। अब, अपने को देहरूप मानने से और भी कौनसी भूल होती है ? यह दिखाते हुये कहते हैं –

चिन्मूर्ति उपयोगस्वरूप मैं हूँ – यह भूलकर अज्ञानी जीव अपने को शरीररूप मानता है; अतः शरीर सम्बन्धी स्त्री-पुत्रादि पदार्थों को भी अपना मानता है। शरीर की अवस्था को लेकर मैं बलवान या मैं दीन – ऐसा मानता है; धन, गृह, गाय-भैंस रेडियो-मोटर ये सब मेरे ही हैं, शरीर अच्छा हो तो मैं सुखी और शरीर रोगी हो तो मैं दुखी – ऐसा मानता है; परन्तु शरीर की जाति तो जड़ है, तुम तो चैतन्यजाति के हो। तुम्हारी चैतन्य जाति स्वयं सुखस्वरूप है। तुमने मिथ्यात्व के कारण अपनी चैतन्य जाति को भूलकर, देह की जाति अपनी मानकर दुःख उत्पन्न किया है।

मिथ्यात्व का नाश करने पर आत्मा स्वयं अपने आप आनन्दस्वरूप है; सुख अपने में ही है; देह में नहीं है। मिथ्यात्वादि के अभाव से आत्मा में रागरहित जो सहज आनन्द अनुभव में आता है, वह सुख है; इसके सिवाय कहीं भी बाहर में देह, स्त्री-धन-बंगला-मोटर आदि में सुख मानना मिथ्या कल्पना है। अज्ञानी भी पर वस्तु का वेदन नहीं करता; परन्तु पर के प्रति राग करके उस राग के वेदन से अपने को सुखी मानता है और 'पर को मैंने भोगा' ऐसा मानता है; सुख परभावों में नहीं है, संयोग एवं परभावों से रहित आत्मा को दृष्टि में लेने पर जो सुख का वेदन हुआ, वही सच्चा सुख है।

रेडियो-मोटर-मकान-तिजोरी – ये तो सब जड़ हैं, उनमें सुख कैसा? जो उनमें

से सुख लेना चाहता है, वह अपने आत्मा के सच्चे सुख को भूल रहा है। अरे, स्वयं जीव होते हुए भी तुमने जीव की चाल को नहीं जाना, जीव का जीवन नहीं जाना और मूढ़ होकर अजीव में अपना अस्तित्व मान रखा है; क्योंकि जिसमें जीव अपना सुख माने उसमें वह अपना अस्तित्व मानता ही है।

अज्ञानी ने बाह्य वस्तु को निजरूप मान लिया है; अतः वह बाह्य की अनुकूलता से अपने को सुखी मानता है और प्रतिकूलता से दुःखी । जो अनुकूलता में सुख माने वह प्रतिकूलता में दुःख माने बिना नहीं रह सकेगा; इसलिये उसको सच्चा समभाव भी नहीं होगा। देह में रोग आने पर 'अरे, मैं मर गया, मेरे जैसा कोई दुःखी नहीं' - ऐसे वह अज्ञानी दुःखी होता है। यद्यपि देह की अनुकूलता के समय भी मोहबुद्धि से वह दुःखी ही है; परन्तु देहबुद्धि की आड़ में उसे वह दुःख दिखता नहीं है ।

आत्मा का सुख कैसा है? - उसको लक्ष में लिये बिना दुःख की भी पहिचान नहीं होती; जैसे दुर्गन्धी/विष्टा का कीड़ा उस विष्टा में भी सुख मान रहा है, वैसे मोह का कीड़ा (मिथ्यादृष्टि) मोह में सुख मानता है; राग में सुख मानता है।

अन्य लोग निरोगी और मैं रोगी, दूसरा धनवान और मैं निर्धन, दूसरों को स्त्री-पुत्रादि और मेरे को कुछ नहीं, दूसरा सुरूपवान और मैं कुरूप, दूसरे को बड़ी-बड़ी पदवियाँ और मुझे छोटी सी नौकरी - इसप्रकार संयोग में ही अपना अस्तित्व देखता हुआ अज्ञानी दुःखी होता है।

अरे जीव ! क्या उनमें तेरा अस्तित्व है? - नहीं; तुम तो उत्कृष्ट चैतन्यस्वरूप के धारक हो; सर्वज्ञपद से भरी हुई तुम्हारी आत्मविभूति जगत् में सर्वोत्कृष्ट है। अरे ! तुम जड़ देह में मूर्छित क्यों हो गये? तुम विज्ञानघन आनन्दमूर्ति भगवान हो फिर स्वयं को भूलकर मृतक कलेवर (शरीर) में क्यों मोहित हो रहे हो? शरीर की अवस्था को तुम अपनी अवस्था मानते हो - यह महान भूल है। मैं पैसेवाला अथवा मैं गरीब - ऐसा मानना भी मूढ़ता है। जब शरीर ही तुम्हारा नहीं तो धन-पुत्र-मकानादि तुम्हारे कैसे हो सकते हैं? जब उनका क्षेत्र ही तुमसे दूर है, तो फिर वे तुम्हारे कहाँ से हो गये? पैसे से तुम धनवान या गरीब नहीं होते; तुम तो चैतन्यलक्ष्मी का निधान हो, आनन्द का भण्डार हो; जिसकी प्रीति के बल पर छहों खण्ड की विभूति का मोह क्षणभर में

छूट जाये ऐसी अनन्त चैतन्यसम्पत्ति का भण्डार हो; अतः दीनता छोड़कर अपनी चैतन्य सम्पदा को सम्भालो।

बाह्य में कर्तापने की बुद्धि से हो-हल्ला मचा के लोग मिथ्यात्व का सेवन करते हैं; परन्तु अपने स्वतत्त्व की सम्भाल नहीं करते। जड़ के संयोग से मैं राजा या मैं रंक हूँ - ऐसा मानना मिथ्यात्व है। पैसा तो पुद्गल की रचना है, उसका जीव की रचना से कोई संबंध नहीं, जीव तो ज्ञानमय है, जड़रूप नहीं। चैतन्य को भूलकर पर का संग करने से जीव दुःखी होता है। कोई जीव 'मेरे रुपये' ऐसा तीव्र मोह करने के कारण मरकर उस रुपये के डिब्बे में ही उत्पन्न होता है। मानों रुपया ही जीव हो - ऐसा मानकर उसके पीछे अपना अमूल्य जीवन खो देता है; किन्तु हे भाई! तेरा जीवन जड़ रुपये से विपरीत चैतन्यमय है; तेरा आनन्द तेरे में ही है, रुपये में नहीं। तू कहता है बंगला मेरा, घर मेरा; परन्तु यह सब तो मिट्टी के हैं; तेरा घर तो चैतन्यमय है; चैतन्यधाम में तेरा वास है, जड़ ईंटों के ढेर में तेरा वास नहीं है। चैतन्यमय निजघर को भूलकर परघर में, राग में या पत्थर के मकान में, झोंपड़े में जीव अपनेपन की बुद्धि करता है और मोह से संसार में रुलता रहता है, बार-बार देहरूपी घर बदलता रहता है। वीतरागी संत उसको अपना असंख्यप्रदेशी अविनाशी आनन्द का धाम - ऐसा निजघर दिखाते हुये करुणापूर्वक कहते हैं कि - हे जीव ! तू निजघर में कभी न आया और बाह्य में चारगतिरूप परघर में ही भ्रमता रहा; अब तो निजघर में आ।

पण्डित दौलतरामजी एक भजन के माध्यम से कहते हैं कि -

हम तो कबहूँ न निजघर आये।।टेक।।

परपद निजपद मान मगन ह्वै, पर परिणति लिपटाये।
शुद्ध-बुद्ध-सुखकंद-मनोहर, चेतन भाव न भाये।। १ ।।
नर-पशु-देव-नरक निज मान्यो, परजयबुद्धि लहाये।
अमल-अखण्ड-अतुल-अविनाशी आतमगुण नहीं गाये।। २ ।।

पत्थर का मकान हो या शरीर यह दोनों ही जड़ की रचनायें हैं, जड़ के भवन में आत्मा का निवास नहीं है; आत्मा का सच्चा निवास तो ज्ञान व सुख के धाम में है - ऐसे आत्मभवन में हे जीव ! तू आ ! अपने निजघर को पहचानकर उसमें तू बस।

पहले के श्रीमन्त लोग अनेक गाय-भैंस रखते थे और उनको अपना धन मानते थे;

परन्तु वे जीव का वास्तविक धन नहीं है। जीव व्यर्थ ही उनके पीछे अपना जीवन गंवाता है। वे कोई भी जीव को शरणरूप नहीं हैं। राजपद या प्रधानपद भी अनन्त बार मिल चुका; परन्तु वे कोई भी जीव के पद नहीं हैं, वे तो अपद हैं; जीव का पद तो चैतन्यमय है। धन-शरीरादि यदि जीव के हों तो वे जीव के साथ ही रहने चाहिए और परभव में भी साथ में जाने चाहिए; परन्तु मरण के समय वे तो सब यहाँ पड़े रह जायेंगे, उनके पीछे जीव ने कितने भी पाप किये हों तो भी वे जीव के साथ आनेवाले नहीं हैं।

मृत्यु के समय जीव शरीर से कहता है कि - हे शरीर! हे मेरे मित्र! तू मेरे साथ चल; जिन्दगी भर हम तुम साथ रहे; अतः अब तू भी मेरे साथ चल!

तब शरीर कहता है कि - मैं तो नहीं आऊँगा।

जीव कहता है - अरे, यह क्या? मैंने तो तेरी संभाल के पीछे सारा जीवन व्यर्थ कर दिया और बहुत पाप करके तेरा पोषण किया; अतः थोड़ी-सी दूरी तक तो मेरे साथ आ !

शरीर कहता है कि - तुम्हारे साथ तो एक डग भी मैं नहीं चलूँगा। तुम तुम्हारे रास्ते, हम हमारे रास्ते। तुम्हारे भावों का फल भोगने को अन्य गति में तुम अकेले चले जाओ, मैं तो यहीं भस्म होकर मिट्टी में मिल जाऊँगा। हमारी तुम्हारी दोनों की चाल न्यारी-न्यारी है, दोनों का रास्ता पृथक्-पृथक् है, तुमने मेरे साथ जो मित्रता की थी, वह तुम्हारी भूल थी।

जब जीवन भर एक ही क्षेत्र में साथ रहनेवाले शरीर की भी यह स्थिति है, तब फिर प्रत्यक्ष भिन्न रहनेवाले पुत्र-स्त्री या मकान आदि का तो कहना ही क्या? वे भी तो जीव को अकेला छोड़कर चले जाते हैं। जीव व्यर्थ का मोह करके दुःखी होता है। मेरी माता, मेरा पुत्र, मेरी पुत्री, मेरी बहिन, मेरा भाई - ऐसा ममत्व करता है; परन्तु हे जीव! तू तो ज्ञानरूप है, आनन्दरूप है ह्न इसप्रकार से अपने ज्ञान-आनन्द को अनुभव में ले; वे तुझसे कभी जुदे नहीं होवेंगे, उनके साथ मित्रता कर। माता-पुत्र, पति-पत्नी, भाई-बहन तो जुदे ही हैं; वे यदि आत्मा के होते तो बाद में जुदे क्यों होते? आत्मा तो इन सबसे भिन्न ज्ञानानन्द स्वरूप है; उसका ज्ञान उससे कभी जुदा नहीं हुआ - ऐसे ज्ञानस्वरूप से जब अपने को अनुभव में लें, तभी आत्मा का सच्चा ज्ञान होता है और तभी आत्मा को पर से भिन्न मानना होता है। परको अपनेरूप मानें और आत्मा को ज्ञानरूप जानें - ऐसी दो विरुद्ध बात एक-साथ नहीं बन सकती। **(क्रमशः)**

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा
पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

प्रश्न : आत्मा में तो अनन्त शक्तियाँ हैं। उनमें से कोई शक्ति ऐसी भी होगी कि आत्मा परद्रव्य का भी कार्य करे ? जिसप्रकार एक गाय को चराने जायें तो उसके साथ में ही अन्य भी दो-चार गायें चराने को ले जाते हैं, उसीप्रकार आत्मा अपना कार्य करने के साथ शरीरादि का भी कार्य करे तो क्या दोष है ?

उत्तर : भाई सुनो ! आत्मा में अनन्त शक्तियाँ हैं। वे अपना सम्पूर्ण कार्य करती हैं और अन्य द्रव्य से भिन्नपने स्वयं को टिकाये रखती हैं। अन्य द्रव्य आत्मा से बाहर लोटते होने से तथा अन्य द्रव्यों में आत्मा का व्याप्य-व्यापकभाव का अभाव होने से आत्मा ज्ञानावरणी कर्म का अथवा शरीरादि अन्य द्रव्यों का कार्य करने में असमर्थ है।

प्रश्न : आत्मा के स्वभाव में दु:ख है क्या ?

उत्तर : नरक के नारकी को स्वर्ग के सुख की गंध नहीं, स्वर्ग के देव को नरक के दु:ख की गंध नहीं, परमाणु में पीड़ा की गंध नहीं और सुख स्वभावी आत्मा में संसारदु:ख की गंध नहीं।

प्रश्न : कृपया ज्ञाता-दृष्टापने का वास्तविक स्वरूप बतलाइये ?

उत्तर : चेतना ही आत्मा का लक्षण है और वह ज्ञान-दर्शनमय है। पुण्य-पाप दोनों ही आत्मा के स्वभाव से भिन्न हैं। आत्मा ज्ञाता-दृष्टा है। पर की ओर देखते रहने मात्र का नाम ज्ञाता-दृष्टापना नहीं है, किन्तु अपने ज्ञायक-दर्शकस्वभाव को पहिचान कर उसमें स्थिर रहना ही ज्ञाता-दृष्टापना है। हमें तो ज्ञाता-दृष्टा रहकर पर का काम करना चाहिये - यह मान्यता मिथ्यादृष्टि की है; क्योंकि आत्मा तो पर का कार्य कर ही नहीं सकता। ज्ञान-दर्शनस्वभाव द्वारा अपने आत्मा को जानकर उसमें स्थिर होना ही मोक्ष जाने का निकट उपाय है।

प्रश्न : भगवान की मूर्ति तो जड़ है, फिर उसकी पूजा का उपदेश क्यों देते हैं ?

उत्तर : अरे भाई ! अभी तू जड़-चेतन को समझ ही कहाँ पाया है ? तेरे स्त्री-पुत्रादि भी तो जड़ ही हैं, फिर उनसे राग क्यों करता है ? आत्मा स्त्री-पुत्रादिरूप नहीं है, तू उनके आत्मा को तो जानता नहीं; केवल शरीर में ही तू स्त्री-पुत्रादि मान बैठा

है। यह शरीर तो जड़ है, फिर भी तू उनसे राग करके पाप बाँधता है और जहाँ सच्चे देव की बात आती है, वहाँ तू कहता है कि मूर्ति तो जड़ है; इसलिये यही कहते हैं कि तुझे देव-गुरु की पहचान ही नहीं है। भगवान के भक्त को प्राथमिक भूमिका में देव-शास्त्र-गुरु के प्रति शुभराग आये बिना नहीं रहता।

प्रश्न : जड़ मूर्ति को भगवान कैसे माना जाये ?

उत्तर : साक्षात् जिनेन्द्र भगवान के अभाव में प्रतिमाजी में उनकी स्थापना की जाती है। स्थापना दो प्रकार की होती है - (1) सद्भावरूप स्थापना और (2) असद्भावरूप स्थापना। जिनेन्द्रदेव के अनुसार उनकी मूर्ति में जिनेन्द्रदेव का आरोप करना सद्भावरूप स्थापना है और पुष्पादिक में स्थापना असद्भावरूप स्थापना है। इन्हें तदाकार और अतदाकार स्थापना भी कहते हैं। जिनदेव की प्रतिमा में जिनदेव की ही स्थापना होती है; इसलिये उस प्रतिमा पर कोई शृंगार आदि नहीं हो सकता। वीतराग की प्रतिमा के वस्त्र नहीं हो सकते, माला नहीं हो सकती, मुकुट नहीं हो सकते, शस्त्र आदि राग-द्वेष के अन्य चिन्ह भी नहीं हो सकते।

प्रश्न : सच्चे देव को देखे बिना उनका निश्चय कैसे किया जाये ?

उत्तर : जैसे कोई आदमी किसी बंद मकान में वीणा बजा रहा हो तो यद्यपि वह आँखों से दिखाई नहीं देता; किन्तु बाहर का आदमी उसकी वीणा बजाने की कला, पद्धति और स्वर इत्यादि से उस पुरुष को देखे बिना ही उसकी कला का निर्णय कर लेता है; उसीप्रकार शरीररूपी मकान में वाणीरूप वीणा द्वारा भीतर स्थित आत्मा के सर्वज्ञ पद का निर्णय हो सकता है।

ज्ञान की वृद्धि और राग-द्वेष की हीनता के आधार पर भी सर्वज्ञता का निर्णय हो सकता है। एक आत्मा से दूसरे आत्मा में अधिक ज्ञान होता है और तीसरे आत्मा में उससे अधिक ज्ञान होता है - इसप्रकार उत्तरोत्तर ज्ञान की वृद्धि होते-होते जिस किसी जीव के परिपूर्ण ज्ञान प्रगट हो, वही सर्वज्ञ है। इसीप्रकार एक जीव के जितना राग-द्वेष होता है, दूसरे जीव को उससे भी थोड़ा होता है तथा तीसरे के उससे भी कम होता देखा जा सकता है ह्न इसप्रकार कम करते-करते अन्त में किसी के राग-द्वेष का सर्वथा अभाव भी होता है। जिसके राग-द्वेष का सर्वथा अभाव होता है, वह वीतराग कहलाता है।

इसप्रकार अपने ज्ञान में सर्वज्ञ के स्वरूप का निश्चय करके जो उन्हें देव के रूप में पूजता है, उनकी श्रद्धा करता है; वह अपनी भक्ति से भगवान को अपने आँगन में ले आता है अर्थात् वह स्वयं सत् के आँगन में पहुँच जाता है।

समाचार दर्शन -

चैतन्यधाम में पंचकल्याणक सम्पन्न

चैतन्यधाम-अहमदाबाद (गुज.) : यहाँ श्री गिरनार, शत्रुंजय, पावागढ़, तारंगा तथा अध्यात्मतीर्थ सोनगढ़ के मध्य में अहमदाबाद-हिम्मतनगर-उदयपुर नेशनल हाइवे पर स्थित चैतन्यधाम प्रांगण में पूज्यश्री कुन्दकुन्द कहान धर्मरत्न पण्डित श्री बाबुभाई मेहता दिगम्बर जैन सत्समागम पब्लिक चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा श्री 1008 आदिनाथ दिगम्बर जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन शुक्रवार, दिनांक 28 नवम्बर से बुधवार, दिनांक 3 दिसम्बर 2008 तक अनेक विशिष्ट कार्यक्रमों सहित सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर भगवान आदिनाथ, भगवान शांतिनाथ, भगवान नेमिनाथ, भगवान पार्श्वनाथ एवं भगवान महावीर की पंचधातु की प्रतिमायें; साथ ही वर्तमानकालीन 24 तीर्थंकरों की पाषाण प्रतिमायें भी विराजमान की गईं।

महोत्सव में अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान **डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल** के प्रतिदिन समयसार ग्रंथाधिराज पर हुये मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। दीक्षा वन में भी आपका वैराग्यपूर्ण मार्मिक प्रवचन हुआ। आपके अतिरिक्त डॉ. उत्तमचन्दजी जैन सिवनी, पण्डित पूनमचंदजी छाबड़ा, पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर, बा. ब्रह्मचारी सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पण्डित ज्ञानचंदजी विदिशा, पण्डित शैलेषभाई तलोद, श्री रजनीभाई दोशी, श्री मीठालाल दोशी, श्री चन्दूभाई एवं श्री इंदुभाई संघवी के भी प्रवचन हुये।

पंचकल्याणक की सम्पूर्ण प्रतिष्ठा-विधि प्रतिष्ठाचार्य बाल ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री दिल्ली के निर्देशन में सह-प्रतिष्ठाचार्य ब्रह्मचारी धन्यकुमारजी बेलोकर गजपंथा, पण्डित मधुकरजी जलगाँव, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बाँसवाड़ा, पण्डित ऋषभजी शास्त्री छिन्दवाड़ा, पण्डित अजितजी अलवर, पण्डित सुबोधजी शास्त्री शाहगढ़, पण्डित सुनीलकुमारजी भोपाल, पण्डित कांतिकुमारजी इन्दौर, पण्डित श्री सुकुमालजी झाँझरी, पण्डित प्रियंकजी शास्त्री दिल्ली, पण्डित श्रेयांसजी शास्त्री, पण्डित के. सी. जी शास्त्री, पण्डित सचिनजी शास्त्रीआदि के सहयोग से शुद्ध तेरापंथ आम्नायानुसार सम्पन्न कराई गई।

महोत्सव के सम्पूर्ण कार्यक्रम पण्डित अमृतभाई फतेपुर एवं पण्डित रजनीभाई दोशी के निर्देशन में सम्पन्न हुये। मंच के सभी कार्यक्रमों का कुशल संचालन पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली ने किया।

महोत्सव में श्री आदिकुमार के माता-पिता बनने का सौभाग्य श्रीमती ललिताबेन जयंतीलाल मेहता तथा डॉ. जयंतीलाल चुन्नीलाल मेहता फतेपुर अहमदाबाद को प्राप्त हुआ। सौधर्म इन्द्र-इन्द्राणी श्री सतीशकुमार अमृतलाल मेहता तथा श्रीमती रीताबेन फतेपुर अहमदाबाद

थे। कुबेरइन्द्र श्री नवीनचंद्र केशवलाल मेहता मुंबई एवं यज्ञनायक श्री अरविन्दकुमार ताराचंद गाँधी तलोद थे।

इस अवसर पर स्वाध्याय भवन, २ धर्मशाला वींग, गुरुदेवश्री के स्टेच्यू एवं नवनिर्मित मंदिर का उद्घाटन किया गया।

रात्रि में इन्द्रसभा/राजसभा के अतिरिक्त नवरंगपुरा मंडल के बच्चों द्वारा विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों का मंचन किया गया। महोत्सव को आकर्षक बनाने हेतु श्री टोडरमल संगीत सरिता जयपुर एवं श्री सीमंधर संगीत सरिता छिंदवाड़ा ने प्रासंगिक गीतों का रसास्वादन कराया।

प्रतिष्ठा महोत्सव में पूरे देश से हजारों मुमुक्षु भाई-बहिनों ने पधारकर धर्मलाभ लिया। इस अवसर पर पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट से ९० हजार ९२८ रुपये का सत्साहित्य एवं ६५ हजार ७८४ घण्टों के डी.वी.डी. एवं सी.डी कैसिट्स घर-घर पहुँचे। **– सचिन शास्त्री, गढ़ी**

पण्डित शैलेषभाई शाह का सम्मान

अहमदाबाद : यहाँ चैतन्यधाम में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महामहोत्सव के मध्य तपकल्याणक के अवसर पर दिनांक 1 दिसम्बर,08 को डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा प्रतिवर्ष विद्वानों के सम्मान क्रम में इस वर्ष जैन दर्शन के प्रचार-प्रसार के क्षेत्र में किये गये विशिष्ट कार्यों के लिये **पण्डित शैलेषभाई तलोद** का सम्मान किया गया।

इस प्रसंग पर पण्डित विपिनजी शास्त्री मुम्बई ने सम्मानमूर्ति का परिचय दिया। आपको प्रशस्ति, शॉल, श्रीफल एवं नगद राशि से पुरस्कृत किया गया

कार्यक्रम में डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, दादा विमलचन्दजी, डॉ. उत्तमचन्दजी, ब्र. सुमतप्रकाशजी, पण्डित पूनमचंदजी छाबड़ा, श्री अनंतभाई सेठ, श्री बसंतभाई, श्री रजनीभाई, श्री महीपालजी एवं श्री बीनूभाई आदि उपस्थित थे।

स्मारक में समयसार की धूम

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल महाविद्यालय में नियमितरूप से चलने वाली गतिविधियाँ ग्रंथाधिराज समयसार की विषय वस्तु को आधार बनाकर संचालित की जा रही हैं।

प्रतिदिन प्रात: 8 से 8:30 तक सत्पुरुषश्री कानजीस्वामी के 47 शक्तियों पर सी.डी.प्रवचन, 8:30 से 9:15 तक ब्र. यशपालजी के भी 47 शक्तियों पर प्रवचन तथा प्रवचनोपरान्त प्रात: व दोपहर में पण्डित शांतिकुमारजी पाटील द्वारा समयसार के पूर्वरंग अधिकार पर कक्षा। सायंकाल छात्र प्रवचन के क्रम में जीवाजीवधिकार एवं मुख्य प्रवचन के रूप में पण्डित शांतिकुमारजी पाटील द्वारा सर्वविशुद्धज्ञानाधिकार पर चर्चा ह्न इसप्रकार दिनभार समयसार की धूम मच रही है।

इसी दौरान दिनांक 14 दिसम्बर को **समयसार का सार** विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी की अध्यक्षता डॉ. श्रीयांसकुमारजी सिंघई ने की। संचालन कु. स्वाती जैन ने किया।

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित –

ऐतिहासिक रही बुंदेलखंड तीर्थयात्रा

अखिल भारतीय जैन युवा फैडेरशन द्वारा आयोजित वीतराग-विज्ञान यात्रा संघ की बुंदेलखण्ड के तीर्थक्षेत्रों की यात्रा दिनांक 7 दिसम्बर से 14 दिसम्बर, 08 तक अनेक विशिष्ट उपलब्धियों सहित ऐतिहासिक रूप से सम्पन्न हुई।

दिनांक 7 दिसम्बर, 08 को सायंकाल श्री परमागम मंदिर सोनागिर में यात्रा उद्घाटन सभा का भव्य आयोजन किया गया। सभा का संचालन पण्डित पीयूषकुमारजी शास्त्री जयपुर ने किया। इस अवसर पर श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने यात्रा सम्बन्धी विस्तृत जानकारी सभी यात्रियों को प्रदान करते हुये कहा कि इस यात्रा में आवास, भोजन, यातायात एवं तीर्थक्षेत्रों के दर्शन की उत्कृष्ट व्यवस्था के साथ-साथ प्रतिदिन भक्ति, पूजन एवं डॉ. भारिल्ल आदि विशिष्ट विद्वानों के प्रवचनों का लाभ इस यात्रा की महत्त्वपूर्ण विशेषता है।

यात्रासंघ के संघपति श्री जमनालालजी-सूरजदेवी सेठी, श्री प्रकाशचन्द-शशि सेठी जयपुर का साफा, जॉकिट, शॉल, श्रीफल एवं प्रशस्ती पत्र प्रदान करके सम्मान किया गया। आपके अतिरिक्त श्री कैलाशचन्दजी सेठी एवं श्री रतनलालजी सेठी का भी साफा आदि पहनाकर अभिनन्दन किया गया।

इसी प्रसंग पर तीर्थयात्रियों के लिये उपयोगी सामग्री सहित तैयार की गई विशेष यात्रा किट का विमोचन श्री किरणभाई गाला मुम्बई ने किया। किट के रूप में प्रदान किये गये आकर्षक बैग में यात्रियों की सुविधा को ध्यान में रखकर पूजन का बटुवा, पानी छानने की थैली, यात्रा का दैनिक कार्यक्रम फोल्डर, सुन्दर कैप, यात्रियों को सोनागिर-चन्देरी-पपौरा-द्रोणगिरि में कौनसे रूम में रुकना है उसका व्यक्तिगत पूर्व निर्धारित चार्ट तथा यात्रियों के स्वयं का व्यक्तिगत नाम छपी हुई उनके लिये पर्सनल यात्रा डायरी (जिसमें सभी क्षेत्रों का परिचय, नित्य उपयोगी पूजन एवं भक्तियों के सुन्दर संकलन के साथ-साथ प्रवचन एवं अन्य जानकारियाँ नोट करने हेतु खाली पेज थे) दी गई।

सभी यात्रियों के नाम फोटो एवं संक्षिप्त आवश्यक जानकारी सहित विशेषरूप से तैयार किये गये परिचय-पत्र एवं लगेज टैग भी किट के साथ दिये गये।

इस अवसर पर ख्यातिप्राप्त विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, पण्डित ज्ञानचन्दजी जैन सोनागिरि, पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा, पण्डित प्रदीपकुमारजी झांझरी एवं पण्डित संजीवकुमारजी गोधा मंचासीन थे।

दिनांक 8 दिसम्बर को संघपति श्रीमान जमनालालजी-श्रीमती सूरजदेवी सेठी के अस्थायी निवास से बैंडबाजे एवं लवाजमें सहित भव्य शोभायात्रा निकाली गई। शोभायात्रा के साथ चलते हुये सभी यात्री पर्वतराज पर वंदना के लिये पहुँचें; जहाँ पर श्री चंद्रप्रभ जिनालय में संगीतमय भक्ति पूजन के उपरान्त डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल का मार्मिक प्रासंगिक प्रवचन हुआ।

दोपहर में परमागम श्रावक ट्रस्ट सोनागिरि द्वारा विद्वानों, संघपति एवं यात्रियों का भव्य स्वागत/सम्मान समारोह आयोजित किया गया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. मुकेशजी शास्त्री विदिशा ने किया। ट्रस्ट के महामंत्री श्री पदमजी पहाडिया ने संस्था का परिचय दिया।

यात्रा संघ ने सोनागिर से रवाना होकर करगुवांजी, पवांजी, खनियांधाना, चन्देरी, खंदार, थुवोन, बरौदास्वामी, सैरोनजी, पपौरा, बानपुर, देवगढ, ललितपुर, टीकमगढ, आहारजी, खजुराहो, छतरपुर-डेरा पहाडी, नैनागिरि, कुण्डलपुर, द्रोणगिरि आदि क्षेत्रों की वंदना की।

जिस-जिस मार्ग से होकर यात्रा संघ निकला, उस मार्ग में पडनेवाली एवं निकटवर्ती स्थानों की फैडरेशन शाखाओं, मुमुक्षु मंडलों एवं समाज के प्रतिष्ठित महानुभावों ने यात्रा संघ की बैंड-बाजों से अगवानी की, अनेक स्थानों पर विद्वानों सहित सभी 350 यात्रियों का तिलक लगाकर एवं नारियल भेंट कर स्वागत किया गया। ऐसा लगता था मानों पूरा बुंदेलखण्ड क्षेत्र ही यात्रा संघ के आगमन से उत्साहित और आनंदित है।

यात्रा संघ की टीम ने यात्रियों की सुख-सुविधाओं का ध्यान रखते हुये आरामदायक यात्रा के लिये 2 X 2 पुश बैक डीलक्स बसों, गुजराती/उत्तर भारतीय स्वादानुसार स्वादिष्ट भोजन एवं अल्पाहार की उत्तम व्यवस्था की।

यात्रियों को स्थानीय स्तर पर उपलब्ध उपयुक्त आवास की सुन्दरतम एवं सुविधायुक्त व्यवस्था व देखभाल के लिये तथा सामान उठाने-रखने हेतु सेवक, सुरक्षा हेतु सुरक्षाकर्मी, मेडिकल सुविधा के लिये डॉक्टर, मेडिकल किट, सुरक्षा एवं निश्चिन्तता के लिये ट्रेवल इन्श्योरेन्स की व्यवस्था की गई थी।

पूरी यात्रा को ऐतिहासिक एवं भव्यरूप प्रदान करने में यात्रा संयोजक श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, पण्डित पीयूषकुमारजी शास्त्री, पण्डित धर्मेन्द्रकुमारजी शास्त्री जयपुर एवं इवेन्ट आर्गनाइजर श्री विजयजी नवलखा अहमदाबाद का श्रम विशेषरूप से सराहनीय है।

इसके अतिरिक्त बस प्रतिनिधी श्री राजेश शाहगढ, श्री अभिजीत पाटील, श्री अनेकान्त भारिल्ल, श्री अंकित शास्त्री, श्री अजय शास्त्री, श्री सजल शास्त्री, श्री राहुल शास्त्री, श्री सर्वज्ञ भारिल्ल एवं श्री देवेन्द्र मिश्रा जयपुर का सहयोग उल्लेखनीय है।

इसप्रकार यह यात्रा ऐतिहासिक उपलब्धियों के साथ सानन्द सम्पन्न हुई। यात्रा के विस्तृत समाचार जैनपथप्रदर्शक के आगामी अंक में प्रकाशित किये जा रहे हैं। ●

पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल का –

हीरक जयन्ती समारोह

फैडरेशन द्वारा आयोजित तीर्थक्षेत्रों की यात्रा के दौरान बुन्देलखण्ड की प्रसिद्ध धर्मनगरी ललितपुर में सकल दिगम्बर जैन समाज, मुमुक्षु मण्डल एवं फैडरेशन शाखा ललितपुर द्वारा संयुक्तरूप से पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल की 76वीं सालगिरह के अवसर पर **दिनांक 11 दिसम्बर, 2008** को रात्रि 7.30 से 11.30 बजे तक हीरक जयन्ती का विशाल कार्यक्रम आयोजित हुआ।

यात्रा संघ जैसे ही ललितपुर की सीमा में प्रवेश हुआ, वैसे ही सम्पूर्ण यात्रियों सहित ललितपुर की समस्त जैन समाज द्वारा पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल एवं डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल को बैण्ड बाजों के साथ विशाल नगर शोभायात्रा के साथ नगर के बीच स्थित चौराहे पर बनाये गये विशाल पाण्डल में लाया गया। जहाँ मौजूद हजारों लोगों की उपस्थिति में पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल की हीरक जयन्ती मनाई गई। इस अवसर पर उनकी धर्मपत्नी श्रीमती कमलाजी भारिल्ल एवं डॉ. भारिल्ल की धर्मपत्नी श्रीमती गुणमाला भारिल्ल भी मंचासीन थीं।

इस अवसर पर दिगम्बर जैन पंचायत के अध्यक्ष श्री अजितकुमारजी खजुरिया, महामंत्री श्री अनिलकुमारजी अंचल, समैया समाज के अध्यक्ष श्री शीलचन्दजी, गोलालारीय समाज के अध्यक्ष श्री अरविन्दकुमारजी, मुमुक्षु मण्डल के अध्यक्ष श्री मुन्नालालजी एडवोकेट, मंत्री श्री अनूपजी नजा, फैडरेशन के अध्यक्ष श्री राकेशजी अनौरा, मंत्री श्री सुनील कौशल, सैरोनजी क्षेत्र के अध्यक्ष श्री हीरालालजी खजूरिया, पूर्व नगर पालिका अध्यक्ष श्री जीवनलालजी एडवोकेट, झांसी क्षेत्र के विधायक श्री प्रदीप आदित्य, अपर पुलिस अधीक्षक ललितपुर आदि मंचासीन अतिथियों के अतिरिक्त अन्य अनेक संस्थाओं, विशिष्ट महानुभावों एवं यात्रियों ने शॉल, श्रीफल एवं प्रशस्ति-पत्र भेंटकर माल्यार्पण द्वारा पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल का सम्मान किया।

सभा का संचालन श्री सुरेशजी जैन एडवोकेट बानपुर ने किया।

सम्मान के उपरान्त पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल का आधा घण्टा तात्त्विक उद्बोधन तथा डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल का 'अहिंसा' पर व्याख्यान हुआ।

इस अवसर पर संघपति श्री जमनालालजी प्रकाशचन्दजी सेठी परिवार जयपुर एवं श्री सुरेशचन्दजी बैंगलोर की ओर से भारिल्लजी द्वारा लिखित तात्त्विक उपन्यास 'नींव का पत्थर' एवं तथा 'समाधि और सल्लेखना' नामक पुस्तकों की 1000-1000 प्रतियाँ स्वाध्याय हेतु समाज में वितरित की गईं।

तीर्थधाम सिद्धायतन द्रोणगिर में –

डॉ. भारिल्ल का नागरिक अभिनन्दन

श्री गुरुदत्त कुन्दकुन्द कहान स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट द्रोणगिर द्वारा मुमुक्षु समाज के शिरोमणि विद्वान तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का बुन्देलखण्ड यात्रा के अवसर पर सिद्धायतन द्रोणगिरी पधारने के अवसर पर रविवार, **दिनांक 14 दिसम्बर, 2008** को नागरिक अभिनन्दन किया गया। समारोह की अध्यक्षता श्रीमान दशरथ जैन एडवोकेट ने की।

विशिष्ट अतिथि के रूप में सेठ गुलाबचन्दजी जैन सागर, श्री कृष्णचन्दजी जैन लालदुकान सागर, श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, सेठ दामोदरजी जैन शाहगढ के अतिरिक्त श्री सुरेशचन्दजी कोलकाता, श्री उल्लासभाई जोबालिया मुम्बई, श्री ललितभाई तलाटी, श्री आदीशजी दिल्ली, श्री कैलाशचन्दजी सेठी, श्री अजितजी तोतूका आदि मंचासीन थे।

विद्वत्वर्ग में पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा, ब्र. कैलाशचन्दजी अचल, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा, पण्डित कोमलचन्दजी जैन आदि मंचासीन थे।

इस अवसर पर डॉ. भारिल्ल को तीर्थधाम सिद्धायतन की ओर से 75000/-रुपये की राशि, शॉल, श्रीफल एवं प्रशस्ति-पत्र समर्पित करते हुये **'बुन्देलखण्ड गौरव'** की उपाधि से अलंकृत किया गया, जिसका उपस्थित जन समुदाय ने हर्षध्वनिपूर्वक अनुमोदन किया।

इसके उपरान्त मुमुक्षु मण्डल बण्डा, टीकमगढ, खडैरी, बकस्वाहा की ओर से भी 11-11 हजार रुपये की राशि भेंट की गई। इसके अतिरिक्त सिद्धक्षेत्र द्रोणगिरि, नैनागिरि, जैन समाज छतरपुर, सागर, बडामलहरा, घुवारा, शाहगढ, ललितपुर आदि अनेक मुमुक्षु मण्डल तथा अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन शाखा भोपाल एवं अन्य क्षेत्रीय फैडरेशन शाखाओं द्वारा बृहत्स्तर पर शॉल, माला आदि के माध्यम से डॉ. भारिल्ल का नागरिक अभिनन्दन किया गया।

सभा को संबोधित करते हुये श्री चन्द्रभानजी जैन ने डॉ. भारिल्ल का परिचय दिया। साथ ही श्री कल्पेशजी जैन इन्दौर, श्री रमेशजी सौगाणी, श्री सुरेशचन्दजी पिपरा-टीकमगढ, श्रीमती ज्योति-किरण गाला मुम्बई, पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा जयपुर, पण्डित कोमलचन्दजी सिद्धायतन, श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, श्री विनोदजी दलपतपुर, श्री कैलाशचन्दजी सेठी जयपुर आदि ने भी डॉ. भारिल्ल द्वारा किये गये कार्यों की मुक्त कंठ से सराहना करते हुये अपने उद्गार व्यक्त किये।

अन्त में डॉ. भारिल्ल ने अपने मार्मिक उद्बोधन के पश्चात् अपनी ओर से 5100/- रुपये मिलाकर सम्पूर्ण राशि को तीर्थधाम सिद्धायतन में एक सुन्दर सत्साहित्य विक्रय केन्द्र की स्थापना हेतु प्रदान कर दिया।

सभा का संचालन पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा ने किया।

भव्य शिलान्यास समारोह

गुरसराय-झाँसी (उ. प्र.) : यहाँ दिनांक १ से ३ नवम्बर तक भक्तामर महामंडल विधान एवं एक साथ तीन शिलान्यास महोत्सव सम्पन्न हुये।

महोत्सव में श्री **बीस तीर्थंकर दिगम्बर जिनमंदिर** का शिलान्यास श्री विमलकुमारजी जैन नीरू केमिकल्स नई दिल्ली के करकमलों द्वारा, **श्री कुन्दकुन्द कहान स्वाध्याय भवन** का शिलान्यास श्री विजय बहादुर जैन हरपालपुर द्वारा एवं **श्री वीतराग-विज्ञान पाठशाला** का शिलान्यास श्री दिगम्बर जैन समाज रानीपुर द्वारा किया गया। धर्म-ध्वजा को फहराने का सौभाग्य श्री सतीशचंदजी जैन ठेकेदार, ग्वालियर परिवार को मिला।

महोत्सव के मण्डप उद्घाटनकर्त्ता श्री राजेन्द्रकुमार (सट्टा वाले) गुरसराय, मंच उद्घाटनकर्त्ता श्री प्रद्युम्नकुमार जैन रानीपुर एवं श्रीजी विराजमानकर्त्ता श्री राजेन्द्रकुमार जैन घुरैया थे। इस अवसर पर चौ. लक्ष्मीचंद्र, सनतकुमार जैन ने जिनमंदिर निर्माण हेतु 40X60 वर्गफुट जमीन ट्रस्ट को दान देने की घोषणा की।

इस प्रसंग पर पण्डित गुलाबचंदजी जैन बीना, पण्डित रमेशजी इन्दौर, पण्डित सुरेशजी टीकमगढ़ एवं पण्डित केवलचंदजी के प्रवचनों का लाभ मिला।

विधि-विधान के समस्त कार्यक्रम बालब्रह्मचारी चंद्रसेनजी त्यागी बीना की प्रेरणा से बालब्रह्मचारी पण्डित जतीशचंदजी शास्त्री के निर्देशन में पण्डित कांतिकुमारजी शास्त्री इन्दौर के सहयोग से सम्पन्न हुये।

साप्ताहिक गोष्ठियाँ सम्पन्न

जयपुर (राज.) : श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय की साप्ताहिक रविवारीय गोष्ठियों की श्रृंखला में दिनांक 23 नवम्बर को **प्रमाण-नय : अनुशीलन** विषय पर नवम गोष्ठी का आयोजन जौहरी बाजार, घी वालों के रास्ते में स्थित श्री शांतिनाथ दिगम्बर जैन तेरापंथियान बड़ा मंदिर में किया गया, जिसकी **अध्यक्षता पण्डित संजीवकुमारजी गोधा** ने की। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में श्रीमान् सुशीलजी जैन भी मंचासीन थे।

इस गोष्ठी का संचालन सोमिल जैन ने किया तथा दीपक जैन व अतुल जैन को श्रेष्ठ वक्ता के रूप में चुना गया। इस अवसर पर **अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन द्वारा संचालित पटाखा विरोधी योजना के तहत पटाखे न छोड़नेवाले २७ बच्चों को पुरस्कृत किया गया।**

मंदिर के मंत्रीजी ने मंदिर का परिचय दिया। आभार प्रदर्शन पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री ने किया।

इसी श्रृंखला में दिनांक 7 दिसम्बर को छहढाला पर आधारित **संसार से मोक्ष के पथ पर** विषय पर दशम रविवारीय गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी **अध्यक्षता डॉ. भागचंदजी जैन** ने की। गोष्ठी का संचालन आशीष जैन ने किया तथा स्वानुभव जैन व मयंक जैन को श्रेष्ठ वक्ता के रूप में चुना गया।

शोक समाचार

1. श्रीमंत सेठ दीपचन्दजी जैन सागर का दिनांक 1 दिसम्बर, 2008 को 66 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया है। आप श्रीमंत सेठ डालचन्दजी जैन (पूर्व सांसद) के कनिष्ठ भ्राता थे। आप समाजसेवा के कार्यों में सदैव अग्रणी रहते थे। आप अनेक वर्षों तक तारण समाज सागर के अध्यक्ष रहे। विगत माह ट्रेन दुर्घटना में आप गंभीर रूप से घायल हो गये थे, भोपाल मेमोरियल हॉस्पिटिल में आपका उपचार चल रहा था। वहीं अस्पताल में आपने अंतिम सांस ली।

आपके चिर वियोग से सागर जैन समाज को अपूरणीय क्षति हुई है।

2. जावरा (रतलाम) निवासी श्री केशरीमलजी मन्नालालजी जैन (कलशघर) का दिनांक 30 अक्टूबर, 08 को देवलाली में देहावसान हो गया। आप अच्छे स्वाध्यायी व तत्त्वप्रेमी थे तथा सोनगढ़ एवं स्मारक परिसर में लगने वाले प्रत्येक शिविर में उपस्थित रहते थे।

आपकी स्मृति में आपके परिवार की ओर से 5001 रुपये पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के ध्रुवफण्ड में प्राप्त हुये।

3. सोलापुर निवासी सौ. गुणमाला रतनचन्द शहा का दिनांक 9 नवम्बर, 08 को सल्लेखना पूर्वक देहावसान हो गया है। आप तत्त्वाभ्यासी आत्मार्थी महिला थीं। आपकी स्मृति में वीतराग-विज्ञान को 500 रुपये प्राप्त हुये हैं, एतदर्थ धन्यवाद!

दिवंगत आत्मायें शीघ्र ही सद्गति को प्राप्त हो - ऐसी मंगल भावना है।

आगामी कार्यक्रम...

भिण्ड में आध्यात्मिक संगोष्ठी

भिण्ड (म. प्र.) : यहाँ श्री दिगम्बर जैन महावीर परमागम मंदिर ट्रस्ट भिण्ड द्वारा पाँच दिवसीय आध्यात्मिक संगोष्ठी बाल ब्र. श्री रवीन्द्रजी के सानिध्य में शुक्रवार, दिनांक 16 जनवरी से मंगलवार, दिनांक 20 जनवरी 2009 तक आयोजित की जा रही है।

संगोष्ठी में बा. ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी जैन आगरा, डॉ. वीरसागरजी शास्त्री दिल्ली एवं पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर आदि विद्वानों के व्याख्यानों एवं कक्षाओं का लाभ प्राप्त होगा।

इस मांगलिक अवसर पर आप सभी साधर्मी भाई-बहिनों को इष्ट परिजनों सहित पधारने हेतु हमारा वात्सल्यपूर्ण हार्दिक आमंत्रण है।

कृपया अपने आगमन की पूर्व सूचना अवश्य देवें, जिससे आपकी समुचित व्यवस्था की जा सके। **- मंत्री, महेन्द्र शास्त्री एवं अध्यक्ष, वीरसेन सर्राफ**

श्री दिगम्बर जैन महावीर परमागम मंदिर ट्रस्ट, लश्कर रोड़, नियर परेट चौराहा, भिण्ड (म.प्र.)

श्री वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड

श्री टोडरमल स्मारक भवन

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राजस्थान)

शीतकालीन परीक्षा - कार्यक्रम -2009

दिन व दिनांक	नाम ग्रन्थ
गुरुवार 29 जनवरी 2009	1. बालबोध पाठमाला भाग 1 (बालबोध प्रथम खण्ड) मौखिक 2. जैन बालपोथी भाग 1 (मौखिक) 3. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग 1 (प्रवेशिका प्रथम खण्ड) 4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग 1 5. छहढाला (पूर्ण) 6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) पूर्वार्द्ध 7. मोक्षमार्गप्रकाशक (पूर्वार्द्ध) 8. जैन सिद्धान्त प्रवेशिका (गोपालदासजी बरैया कृत) 9. विशारद प्रथम खण्ड (प्रथम वर्ष)
शुक्रवार 30 जनवरी 2009	1. बालबोध पाठमाला भाग 2 (बालबोध द्वितीय खण्ड) मौखिक 2. जैन बालपोथी भाग 2 (मौखिक) 3. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग 2 (प्रवेशिका द्वितीय खण्ड) 4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग 2 5. द्रव्यसंग्रह (पूर्ण) 6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) उत्तरार्द्ध 7. लघु जैनसिद्धान्त प्रवेशिका (सोनगढ़) 8. मोक्षमार्गप्रकाशक (उत्तरार्द्ध) 9. विशारद द्वितीय खण्ड (प्रथम वर्ष) 10. विशारद प्रथम खण्ड (द्वितीय वर्ष)
शनिवार 31 जनवरी 2009	1. बालबोध पाठमाला भाग 3 (बालबोध तृतीय खण्ड) मौखिक 2. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग 3 (प्रवेशिका तृतीय खण्ड) 3. रत्नकरण्ड श्रावकाचार (पूर्ण) 4. पुरुषार्थसिद्धयुपाय (पूर्ण) 5. विशारद द्वितीय खण्ड (द्वितीय वर्ष)

नोट - (1) सुविधानुसार परीक्षा का समय प्रात: 9 से शाम 5 बजे के बीच कभी भी सैट कर सकते हैं।
(2) जहाँ एक से अधिक केन्द्र हों, वे आपस में मिलकर समय निश्चित करें।
(3) किन्हीं विषयों के छात्र आपस में टकराते हों तो परीक्षा सुविधानुसार दिन में दो बार ली जा सकती है।
(4) बालबोध पाठमाला भाग 1, 2, 3 और जैन बालपोथी भाग 1 व 2 की परीक्षायें मौखिक में लेवें।
शेष सभी विषयों की परीक्षायें लिखित में लेवें। **-ओमप्रकाश आचार्य (प्रबंधक -परीक्षा बोर्ड)**